"अमर जवाहरलाल"

AMINA K. I B.Sc.

उन्नीस सौ चौसठ। एक दिन मैं विविधाभारती सुन रही थी। उस समय अच्छा गाना हो रहा था। अचानक मैं ने एक बड़े दुख की बात सुनी। बात यह थ कि जेवहरलाल नेहरू मर गये। यह सुनकर मैं एक दम घबरा गयी। मुझ को मेरे कानों पर विश्वास नहीं हुआ। तो भी मैं उसकी आत्मा को शांति की प्रार्थना ने लगी।

जेवहरलाल नेहरू की मृत्यु से भारत को बडा नुकसान हुआ है। बहुत काल तक वे हमारे प्रधान मंत्री रहे। भारत को आज़ादी के लिए उन्होंने बहुत परिश्रम किया था। भारत के ही नहीं सारे लोग उनका आदर करते थे। वे राज्य के चौन और शांति के लिए बडा परिश्रम करते थे। राज्य की लडाई से रक्षा करने के लिए उन्होंने बहुत परिश्राम किया था। उनकी मृत्यु का समाचार सुनते समय थे सारी चिन्तायें मेरे मन में फिर गयी।

मैं सोच रहा था कि भाविन्य में भारत के लोगों की स्थिति क्या होगी और प्रधान मंत्री कौन होगे। चाचा नेहरू की तरह एक मंत्री हमें कभी नहीं मिलेगा। चाचा नेहरू का नाम सुनते समय सारे बच्चों का दिल खुशी से उछलता है।

आज नेहरू का शरीर इस दुनिया में नहीं। लेकिन नेहरू का नाम हम सारे लोगों के दिल में स्थापित हुआ है। आज हमारा कर्तव्य यह है कि नेहरू के आदर्शों का अनुकरण करें।

भारत के सारे लोगों को अगाध दुख़ के अगाध गर्त में डबोते हुए में जेवहरलाल नेहरू स्वर्ग़ सिधारे। लेकिन हमेशा मेरे अंतस्तल से यह शब्द उठता है कि "जवहरलाल नेहरू अमर है"।

भीगी पलकें

मृदुला पाई, I B.Sc.

शास्त्री जी, हमारे बीच से उठ गये। इसलिये हम सबों को अत्यन्त दुख महसूस हो रहा है। जिस काम को नेहरू जी ने शुरू किया था उसे आपने सफलता पूर्वक ज़ारी रखा। १० तारीख़ को उनका स्वर्गवास हुआ। उनके जैसे महात्मा को हम सब कभी नहीं भुलेंगे। वे थोडे ही समय के लिए हमारे प्रधान मंत्री रहे फिर भी उन्होंने अपने काम से लोगों के मन को अपने वश में कर लिया। अचानक ही उनकी मृत्यु हुई, जब वे ताशकेंन्ट कानफेरन्स के लिए गये थे। उसके बाद उन्होंने अपनी जन्मभूमि पर एक दृष्टि भी न डाली। लोगों को यह नहीं नहीं मालुम था, कि जब वे शास्त्रीजी को कानफरेन्स के लिए विदा कर रहे थे तो हमेशा के लिए ही विदा कर रहे थे।

जब उनकी लाश वहाँ से लाई गई थीं तब सभी लोग इक्टठे हुए, अपने प्रधान मंत्रीं को अन्तिम बार देखने के लिए। उनकी माँ अत्यन्त दुखित थी। पर उन्हें यहीं खुशी हुई होगी कि बेटे ने अपनी बात मानकर भारत के लिए अपनी जान तक दी।

शास्त्रीजी का जन्म महात्मा गाँधीजी के समान २ अक्टूबर को हुआ था, और उन्ही के समान पूर्णिमा के पाँच दिन पहले हमें छोड़कर चले गये। उस दिन जो पलकें भीगी हैं वे सूखनेवाली नहीं।

चाँद पर चढ़ाई

P. VEERANKUTTY, I B.A.

एक दिन की बात है कि मैं बिना किसी काम के बैठा था। सोवा-चलो चलकर शिकार खेला जाय। बन्दूक लेकर मैं जंगल में पहुँचा बहुत ही मनोहर जंगल था वह। मैं शिकार वग़ैरह भूल कर नयनाभिराम मनोहर दृश्यों को देखने ने में खो गया। एकएक सूखे पतों की चरमराहट ने मेरा ध्यान तोडा। मैंने देखा कि एक काला हिरण मेरे पीछे से भाग रहा था। वह इतना सुन्दर या कि मैं उसको देखता ही रह गया कितने सुन्दर सींग़ें थी ये उसकी। मैंने जन्दूक लिए उसका पीछा किया। वह हिरण वायू से बाते करने लगा, किन्तु मैं उसका पीछा करता रहा, जब वह थक कर हाँफने लगा तो वह मुझे बोला "तुम मुझे मारो मत मैं तुम्हें चाँद पर छोड आऊँगा।"

इतना सुनकर मैं उसकी पीठ पर बैठ गया। बस फिर क्या या थोड़ी ही देर में मैं चाँद पर पहुँच गया। तब मैं चारों ओर धूमने लगा वहाँ पर सोने चाँदी के पेड थे जिन पर हीरों के फल थे।

मैंने झींलका पानी पिया जो मुझे संतरे के रस के समान लगा। थका एक एक बच्चे की छींकने की आवाज़ मेरे हृदय को वेध कर निकल गयी। जब मैंने पीछे मुडकर देखा तो एक भयानक अजगर एक छोटे से पंखोंवाले बच्चे को लपेटे हुए था। यह देख कर मुझे बहुत ही क्रोध आया, मैंने बन्दूक से निशाना साधा और एक ही गोली से अजगर को घांयल कर दिया क्योंकि मैं अव्वल दर्जे का निशानेबाज़ या। अब वह अजगर कुछ न कर सका और गुस्से में मुँह से फेन उगलने लगा जो इतनी भयानक थी कि वहाँ के पेड पौधे सब गरम हो कर जल गये। उस बच्चे ने मुझे बहुत बहुत धन्यवाद दिया और बोला कि यहाँ एक बडा राक्षस रहता है, तुम तो इतने वीर हो कि उसको सरलतापूर्वक जीत सकोगे। अपनी बढाई सुनते ही मैं फूला न समाया और राक्षस पर विजय पाने के लिए चल पडा। मैं उसके किले में गया तब वह सो रहा या। मैंने सोचा भि सोते हुवे को मारना अच्छा नहीं है, इसलिए मैंने उसको पुकारा, तब उसने मेरे ऊपर एक विशाल वृक्ष फेंका किन्तु मैंने एक तरफ को हट गया और उसकी छाती को भेद दिया। फिर मैंने बहुत सी सोने से भरी हुई थैलियाँ उठाई और बाहर आया। किन्तु उस राक्षस का भाई मेरे सामने आ गया। तब मैंने अपना साहस खो दिया और बेहताशा भागा। आमे मुझे एक अन्तरीक्ष यान दिखाई दिया तब मैं उसमें चढा गया। वह देख कर बहुत खुश हुआ कि वह ठीक तरह से था।

बस फिर क्या हुआ मैंने यान को हो कर दिया और उडने लगा। जब मैंने खिडकीसे देखा कि उस राक्षस के भाई ने मेरे यान के ऊपर पत्थर फेका जो पहाड़ के बरावर था। मेरा यान २ दुकड़े होकर नीचे गिरा और मैं भी चीखता चिल्लाता नीचे की और आने लगा। किन्तु जब मेरी नींद खुली तो मैं क्या देखता हूँ कि सभी रूम-मेट मेरे चारों और बैठे हैं, मेरी नाक से खून निकल रहा था और सिर बहुत जोरों को दर्द कर रहा था। और मैं बिस्तर के नीचे पडा था। जब मैंने अपना सपना सबको सुनाया तो उन्होंने इसको चाँद पर चढाई का नाम दिया।

देश प्रेम

एन. शारदा, I B.A.

जननी और जन्मभूमि दोनों स्वर्ग से भी बढकर हैं। जिस देश में हम ने जन्म लिया और जहाँ पलकर हम बडे हुए हैं, उसके प्रति प्रेम या अनुराग होना बिलकुल स्वाभाविक है। जिस प्रकार मनुष्य को अपने परिवार से, माता, पिता, भाई, बहन, स्त्री, पुत्र आदि से प्रेम होता है, उसी प्रकार साथ रहते रहते अपने पडोसियों से भी प्रेम हो जाता है और यही, प्रेम का भाव जब और अधिक उदार और विकसित हो जाता है, तो मनुष्य अपने सभी देशवासियों को अपना भाई या मित्र समझ लेता है और उनसे प्रेम करता है।

देश भक्ति मन की एक उच्च भावना है। यह हमें देश के प्रति अपना सर्वस्व बलिदान करने के लिए प्रेरित करती है। सच्चे देशभक्त की दृष्टि में देश की सेवा करना ही सबसे बडा कर्तव्य होता है।

किसी भी भूभाग को हम देश कहते हैं। वहाँ के पहाड, वहाँ की नदियाँ और वहाँ के वन आदि सब वस्तुओं के प्रति तीव्र प्रेम होना ही देशभक्ति नहीं है, अपितु उस देश के निवासी देश का और भी महत्वपूर्ण अंग हैं। देशभक्त की दृष्टि में जैसे भूभाग के बिना केवल निवासी देश नहीं कहला सकते, उसी प्रकार निवासियों के बिता भी कोई भूभाग देश नहीं कहलाएगा। देश भक्त के लिए तो भूभाग और उसके निवासी दोनों मिलकर ही देश है।

हमारी उन्नति या अवनाति हमारे देश की दशाओं पर निर्भर है। जो लोग उन्नत देशों में जन्म लेते हैं, वे अधिक शिक्षा पाते हैं, अधिक सुखी जीवन बिताते हैं। इसके विपरीत अवनति के कारण जीवन का अधिकाँश भाग कष्ट में बिताते हैं। यदि हमारा देश उन्नत हो तो हम संसार में गौरव के साथ सिर ऊंचा करके खडे हो सकते हैं।

देश की रक्षा करना हमारे कर्तव्य है। इस समय हमारे देश की जो भी स्थिति है, वह हमारे पूर्वजों के कार्यों का फल है। हमारा देश की रक्षा करने से भविष्य उज्वल होगा। संसार का इतिहास ऐसे असंख्य उज्वल उदाहरणों से भरा पडा है। जिन में लोगों ने अपने देश की स्वाधीनता की रक्षा के लिए हँस्ते-हँस्ते अपने प्राण न्याछावर कर दिए। ऐसे देश भक्त वीर सभी देशों में और सभी कालों में होते रहे हैं। रूस, जापाग, जर्मन, इंग्लैंड आदि सभी देशों में देश भक्त वीरों को अत्यंत गौरव का स्थान दिया गया है और उनकी कहानियाँ बडे प्रेम और आदर के साथ सुनी जाती हैं। हमारे भारत में भी देशभक्तों की परम्परा बडी उज्वल रही है। चन्द्रगुप्त मौर्य के समय से भारत का ज्ञात इतिहास प्रारम्भ होता है। अंग्रेज़ों के राज्य काल में लाखों वीरों ने देश को स्वाधीन करने के लिए अपने प्राणों की बाज़ी लगा दी। अंत में देश स्वाधीन हुआ। अनेक नवयुवक देश की स्वाधीनता केलिए जानते-बूझते हंसते-हंसते फांसी पर झूल गये या गोलियों के सामने छाती खोलकर वीरगति को प्राप्त हुए।

देशभक्त का कार्य केवल विदेशी शासन या आक्रमण के विरुद्ध लडना ही नही है, अपितू देश की

रक्षा सुधारने के लिए अशिक्षा, गरीबी और सामाजिक विषमता के विरुद्ध लडना भी है। सभी देशों में सदा कुछ न कुछ अभाव अवश्य होते हैं, जिन्हें दूर करने के लिए देश भक्त कार्य कर सकते हैं।

अपने देश की उन्नति के लिए प्रयास किया जाए, पडोसी देशों को जीतकर अपने अधीन किया जाए और इस प्रकार अपना देद का प्रभाव बढाया जाए। अब देश भक्ति का अर्थ भी ठीक ठीक समझा जाना चाहिए। देश भक्ति का प्रयोग रचनात्मक कार्यों के लिए होना चाहिए, विनाशात्मक कार्यों के लिए नही। देश भक्त को यदि कभी युद्ध करना ही हो, तो वह अपनी स्वतंत्रता की प्राप्ति लिए करना चाहिए। दूसरों की स्वाधीनता के अपहरण के लिए कदापि नहीं।

सच्चे देश भक्त को देश के लिए आत्मबलिदान करना पडता है। उसे अपनी व्यक्तिगत हानि लाभ की परवाह न करते हुए देश के हित के लिए अपनी संपूर्ण शक्ति लगा देनी पड़ती है। ऐसा बलिदान कभी व्यर्थ नहीं जाता और किसी भी देश के निवासी ऐसे कृतघ्न नहीं होते कि वे ऐसे बलिदान का आदर न करें। सभी देशों में सच्चे देशों में सच्चे देश भक्तों कीं पूजा होती है। स्वार्थी लोगों को लोग केवल उस समय तक आदर करते हैं, जब तक उनके हाथ में सत्ता रहती है, किन्तु सच्चे देशभक्तों का आदर सत्ता न रहने पर भी होता है और उनकी मृत्यु के बाद भी होता है।

यह कहावत ठीक है "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" इसका अर्थ यह है कि माँ और जन्मभूमि स्वर्ग से भी अधिक सुख देनेवाली है।

केरल की माँ

E. RAMACHANDRAN, II B.Sc.

छुट्टियों के दिन थे। कलालय की चहल-पहल से मुक्त होकर अपने गाँव के प्रशान्तसुन्दर वातावरण में मैं स्वयं भूल जाने की कोशिश कर रहा था। कालेज खुलने को अभी दो एक दिन बाकी थे।

होस्टल के पिंजड़े से आज़ाद हुआ तो उमग का ठिकाना न रहा। पश्चिमी घाटियों की शीतल गंभीरता मानव की नगण्यता के उपर घमंड की नज़र डालती है। नदी के झर-झर में क्रूर ईश्वर की मुष्टियों में पडी प्रकृति देवी की सिसकियाँ महसूस होती थीं। इस संसार की कृत्रिम सभ्यता का भयानक स्वरूप एक तिल के बराबर छोटा हो गया, प्रकृति की अत्यन्त गंभीरता के सामने। सुन्दर सुनहले बादलों पर मैं सवार हो गया; इस भूमि को भूल कर किसी दूसरी एक अजीब दुनिया में पडा।

उफ यह क्या है। संगीत की धारा यहाँ भी बह कर आयी ? ऐसा दर्द से भरा नाद मेरी आखों से आँसू बहाने लगा। धीरे धीरे उस में सिसकियाँ सुनाई देने लगी विधवाओं की मृत पुत्र माताओं की, और भूखे मरते बच्चों की। साँसारिक विपंचिका का नाद और ज़ोर पकडने लगा। उस नाद ने मुझे उस अजीब दुनियाँ से भूमी पर खींच डाला। लेकिन गाना खतम नहीं हुआ।

मैं उछल पडा। बेफिक्र रहने से ज़रा अस्वास्थय महसूस हुआ तो जरा टहलने का इरादा किया था। उषा की मुस्कुराहट अब प्रसन्न तम हो गयी थी। मुड कर देखा तो कोई पाँच या छः साल की एक लडकी माग आती थी। फूट फूट कर रोती थी।

"हाय ! माँ मुझे मारो मत। ज़रूर ! माँ, मैं जाऊँगी, रोज़ स्कूल जाऊँगी। अफ ! रहम कृपा करके मत मारो। माँ !"

ऐसे चिल्लाती हुई बालिका उछल उछल कर भाग भाग आती थी। वेदना की मूर्ति थी वह। मैले फटे कपड़े उसके दुबले पतले शरीर को ढक लेनें में असमर्थ थे। उसकी गरम आँसूओं के पीछे एक चमक थी जिस को दरिद्रता कभी छिपा न सकती है।

वह लडकी मुझे पार कर आगे बढी तो पीछे एक लकडी हाथ में लिए उसकी माँ आती दीख पडी। दरिद्रता का मूर्तिमान स्वरूप।

मैं उन से बोला : "बेचारी बच्ची। क्यों इस तरह मारती हो ?" मेरी सहानुभूति ने उस अनवढ़ औरत के दिल में किसी दूसरे विकार को जगा दिया लेकिन रोष की दिखावट उस दिल के पुत्री स्नेह का गहनता छिपा न सकी।

"घर में रहने से क्या ? ज़रा स्कूल जाकर पढे तो वही सही। दो पहर दूध भी मिलेगा।"

उनकी वाणी में आशा की लहरें थी। अपनी इकलौती बेटी से वे बहूत कुछ चाहती थी। लेकिन उस के आँसू मेरी आँखों में जागती पीढियों की ओर विद्या का एक आदम्य आवाहन था।

बातें पूछने पर मालूम पडा कि उस लडकी के पिता मर चुके थे। उस को स्कूल जाने में लगन नहीं। रोज़ शाम को स्कूल से आकर रोती थी। नये कपड़े या पेन्सिल या खिलौना खरीद देने को कहा करती थी। अपनी सहपाठिनियों की तरह होने की अभिलाषा थी। लेकिन, उस विथवा के पास अपनी प्यारी पुत्री को भूख और प्यास के सिवा से और कुछ देने को नहीं था। कभी कभी उसको डाढस बँधाती, कभी फूट फूट कर रोती थी।

जाते जाते, हम स्कूल के सामने पहूँचे। उनको आँखों के आँसू मेरे हृदय में गिर पड़े।

उस गरीब माता की ओर मेरा ध्यान लगा। अपने प्यारे बच्चों को पानी पिला कर स्कूल भेजने वाली वह माता केरल में अकेली नहीं है। मुहब्बत का आवाहन उन ग्रामीण स्त्रियों को गरीबी से डरने नहीं देगा। दरिद्रता को लात मार कर केरल की माताएँ नवजीवन का ललकर दिलमें में लेकर एक नयी पीढी की स्टष्टि में रत है। उन देवता स्वरूपी माताओं के सामने हम सिर झुकायें। असह्य भूख-व्यास केरल जनता की सभ्यता और ज्ञानयज्ञ को कभी दमन कर नहीं सकेगी।

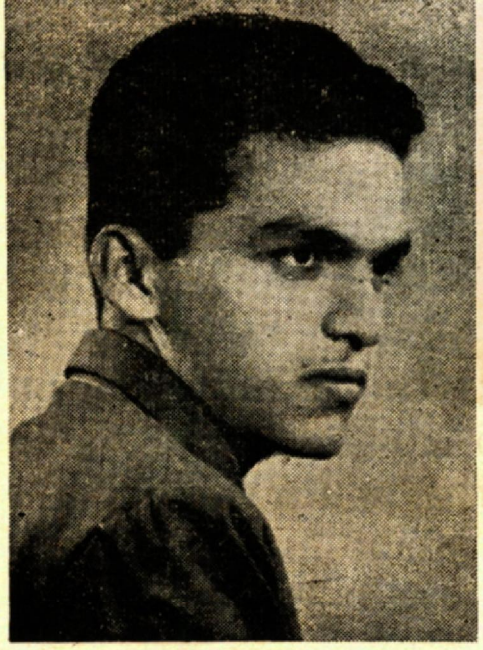

शांति की खोज में

AHAMED SHAREEF, III B. Sc.

यह किसी ने भी नहीं सोचा होगा कि हमारा लाल, इतनी जल्दी हमसे विदा लेंगे। संसार की मानवराशि ताष्केंड में एक शांति की रोशनी के उदय की प्रतीक्षा कर रही थी। सचमुच शांति का उदय हुआ, लेकिन उस प्रकाश की धारा में शोक का काला बादल भी लगा हुआ था। हाँ, भारत के नेता और हमारा लाल, लाल बहादूर शास्त्रीजी हम सब को दुख के सागर में डुबोते हुए इस संसार से सदा के लिए विदा हुए।

युद्ध की भयानक विपत्तियों से भारत और पाकिस्तान के लोगों को वे समाधान और शांति की छाया में लाना चाहते थे। इसके लिए हमारे लाल बहादूर शास्त्री ने अपने जीवन तक का बलिदान किया। हमारे नेता शास्त्रीजी हमारे लाल थे, बहादूर थे। उन्होंने हमें एक शांति पूर्ण दुनिया की स्थापना करने का आवाहन दिया। उन्होंने हमें यह सिखाया कि हथियारों का हथियारों से सामना करना चाहिए। जब भारत पर साम्राज्य लोभियों का नीच और निकृष्ट आक्रमण हुआ तब उन्होंने उस ललकार को स्वीकार किया और उसका सामना करने के लिए भारतवर्ष के विभिन्न विचार रखने वाले लोगों को एक सूत्र में बाँध दिया।

दो सौ वर्ष के विदेशी शासन से भारत दरिद्र से दरिद्र बन गया था। अन्न के लिए फूट फूट कर रोनेवाले चालीस करोड लोगों को संभालने का भार हमारे स्वर्गीय पूज्य नेहरूजी पर पड गया। उन्होंने एक नवोत्थान के नेतृत्व का भार लिया। जब चीन की लाल सेना पंचशील के तत्वों का उल्लंघन करते हुए हिमालय के उत्तुंग शिखरों पर लाल झंडा फहराने की कोशिश की तब हम 48 करोड लोगों ने उसका सामना किया। शांति को शांति से, आक्रमण को आक्रमण से सामना करने का हमारा ढंग है; आगे भी ऐसा ही करेंगे। पूज्य नेहरूजी को विदा हुए दो वर्ष बीत गये। अब खुदा ने हमारे लाल बहादूर को भी छीन लिया है ओ, रे नियति तू इतना क्रूर है, हम लोगों ने तुम्हारा क्या बिगडा ?

लाल बहादुर शास्त्री आकार में छोटे थे। लेकिन उनकी ताकत देखकर आक्रमण कारियों का दिल धडकता था। जिन्होने काश्मीर की रणभूमि में शत्रुओं के दाँत खट्टे करवा दिये उन्हीं शस्त्रीजी ने ताष्केंड से शाँति और मैत्री की मुहर लगा दी।

महान लोगों के जीवन का समय छोटा होता है लेकिन उनका प्रभाव स्थायी रहता है। यदि शास्त्रीजी वर्षों तक हमारे बीच में होंते तो अपने शांत, महत्वपूर्ण और उज्वल व्यक्तित्व से इस भारत को उन्नति से उन्नति पर पहूँचा देते, उसकी कीर्ति बढाते। पूज्य शास्त्रीजी, आप महानों के महान थे, नेताओं के नेता थे। आप हमें गाँधीजी और नेहरूजी के रास्ते पर ले चले। हम आगे भी उसी रास्ते पर चलेंगे।

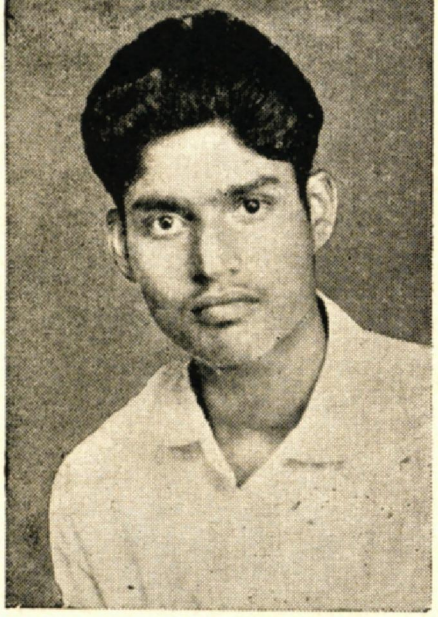

* स्मृति *

के. के कुञ्जिरामन, II B.Sc.

दिसंबर का महीना था। इतवार का दिन था। मेरे कमरे के साथी घर गये थे। इसलिए मुझको कमरे में अकेले रहना पडा। रात का जाडा सहा नहीं जा सकता था। अत: चारपाई पर लिहाफ के नीचे पडा था। सबेरा होने पर भी वहाँ पडे रहने में सुख था और सपनों में डूबा।

"परीक्षा का दिन था। उठने में देर हो गयी थी। घबराया जल्दी जाकर मुँह धोया और स्नान भी किया। चाय पीने के बाद पुस्तक के पन्ने पलटने लगा। एक एक विद्यार्थी कालेज की तरफ जा रहा था। मैं भी जल्दी वस्त्र बदल कर परीक्षा देने को तय्यार हो गया। जाकर बेंच पर बैठ गया।·· कुछ भी मन में नहीं आता था··· । किसी तरह एक प्रश्न का जवाब लिख चका। तब घंटी बजी, दो बार। एक घण्टा हो चुका था। मैं चौंक पडा।" ··· और मैं जाग उठा। तब जान पडा कि दरवाज़े पर कोई 'टक'·····'टक' आवाज़ करता है। मैंने जल्दी दरवाज़ा खोल दिया और देखा; तीन साथी। उनको मुझसे कोइ बात करनी थी लेकिन मुझे फिर भी चारपाई पर पडे देखकर वे बिना कुछ कहे लौट गये।

मेरेलिए वह दिन अच्छा नहीं लगा। इसलिए मैं चारपाई पर लेट गया था। जो आये थे उनसे कुछ भी न कहा। मेरा बर्ताव उनको अच्छा नहीं लगा होगा। उनसे माँफी माँगना चाहिए था। लेकिन मैं ने ऐसा नहीं किया। हमारे बीच में कोई मत भेद या भेदभाव नहीं था। गाढी दोस्ती थी। उन से मेरा परिचय करीब दो साल का था। मैंने सोचा, छात्रालय जीवन का लाभ।

मेरा मन इधर उधर घूँमने लगा।···अधिकतर लडके पढने में लगे हुए थे। मुझ को पढने का मन नहीं था। मैं अभी बिस्तर पर पडा था। मैं सीधे-सादे अच्छे लडकों के साथ रहकर संतुष्ट था। अमुक व्यक्ति अपने चरित्र से दूसरों के लिए ध्येय बन जाता है। एक एक व्यक्ति विभिन्न स्वभाव वाले हैं। छात्रालय में रहने से इन सबों से मिलना संभव हो जाता है। यही था छात्रालय जीवन।··· वह सचमुच सुन्दर है।

मेरा मन छात्रालय को छोडकर बाहरी बातो पर विचर ने लगा।·····'चिडियों का कल-कल रव कानों में पडा मानों प्रकृति-देवी के घुंघरू की आवाज़ हो। ··· पेडों की टहनियों पर नाचने वाली चिडियों का जीवन कितना सुन्दर है! किसी बात पर चिंता नहीं। हमारे जीवन में क्या क्या क्या होने वाला है! जीवन रूपी तंग सडक पर यात्रा करना मुश्किल ही है। लेकिन यही बात सांत्वना देती है,—'मनुष्य तो है'। मानव जीवन काँटों से भरे रास्ते के समान हीं है। जो इस दुनिया में आता है उसको यहाँ कांटों के हार पहनना पडता है। लेकिन हमारेलिए यहाँ मदिरा नहीं मिलती तो आगे कहाँ मिलनेवाली है? असल में यहाँ जीवन का सुख मिलता हैं।··जिसके पास प्रतिभा नहीं वे पढते पढते थक जाते हैं। और मन ऊब जाने के कारण पढना ही असंभव मानते हैं

लेकिन विद्यार्थी केलिए यह सोचना ही जीवन को मिट्टी में मिलाना है। .....सब लोग अपने अपने काम करते हैं। बर्फ से ढकी हुई हिमालय की तराई में हमारे जवान मातृभूमि की रक्षा केलिए घूमते हैं।..... ॥

किसान बैलों को लेकर खेत की ओर चलते हैं। विद्यार्थी और अध्यापक स्कूल या कालेज की तरफ बढते हैं। मामूली आदमी यहाँ वहाँ घूमता है। कुछ तो, काम केलिए; और कुछ किसी दूसरी बात पर। जो भी हो हर एक को घर बार केलिएकुछ न कुछ मिलना चाहिए। जिसको कुछ भी न करना चाहिए वे अभी सोते हैं। यह तो इस दुनिया की चाल है। जब कुछ लोग गौण बात बोलते हैं या वृथा समय बिताते हैं तो कुछ अपने काम को खतम करने केलिए समय नही मिलने के कारण चिंतित रहते है। इस प्रकार सोच विचार करने पर जग जीवन का ओर छोर नहीं मिलता। अलग अलग देश में अलग अलग सभ्यता और सोचविचार का दौरा दौरा होता है।...

भारतवासी अन्न-धन के अर्जन में लगे हुए हैं। तो रूस और अमेरिका के वैज्ञानिक विज्ञान के नये चमत्कारों में पैठकर अपने को उडाने का प्रयत्न करते हैं। आज, विज्ञान क्षण भर में नरवंश का सत्मानाश करने भी पर्याप्त है। इसके अतिरिक्त कुछ लोग, दुनिया में क्रान्ति करने की तय्यारी करते हैं। इन लोगों के बारे में हम क्या कह सकते हैं ? जो शांति और समाधान से जीना चाहते हैं उनको यहाँ जगह नहीं, क्या ? हम देख सकते हैं कि दुनिया के कोने कोने में कई तरह की बाधाएँ मानव जाति को सताती है। इनसे मुक्त होने केलिए शांति का मार्ग चुनना ही पडेगा। अब तक जो बात दुनिया में हुई है वे सब यही शिक्षा देती हैं। जहाँ जहाँ क्राँति का मार्ग लिया है तहाँ तहाँ कुछ न कुछ विपत्ति ज़रूर हुई है। यह भी नहीं हमारा जीवन भी दुख भरा होता है। इसलिए हमारे पूर्व गर्व से बचने केलिए शांति का मार्ग खोजना ही पड़ेगा। जब तक यह समझ में नहीं आता तब तक मानव जीदन खतरे में है।.....

इन बातों के बारे में विचार करके समय नष्ट करने की क्या आवश्कता है, लेकिन इस दुनिया में रहकर इन सब बातों को जो नहीं जानते वे कुए के मेढक से बढकर नहीं है। इसलिए हमको सब बातों पर ध्यान रखना चहिए। आजकल हमारा देश कुछ तकलीफों से गुज़रता है। अब यदि हम अपना काम ठीक तरह से नहीं करते तो हमारे देश की उन्नति नहीं होगी। हमको दूसरों की सेवा करनी चाहिए। श्री विवेकानन्द जी ने कहा है कि हम दूसरों की मदद नहीं कर सकते, दूसरों की सेवा कर सकते हैं। और दूसरों की सेवा करना ईश्वर की सेवा करना है। इस से सिद्ध हो जाता है कि हम को दूसरों की सेवा करना ज़रूरी है। जो लोग दूसरों केलिए काम करते आये है वे ही यहाँ धन्य मानेगये है। हमें उनके बधाईयाँ देनी चाहिए।

दूसरों के मदद देने और निस्वार्थ सेवा करने से आत्मोद्धार होता है। दूसरों केलिए अपने देश केलिए—जीवन बिताने में ही हमारा जीवन सफल होता है। सच्चा प्रेम मन में हो तो कोई भी काम असंभव नहीं होता। लेकिन मन में ऐसा प्रेम होना चाहिए, यही अवश्यक है। यहाँ श्री रामनरेश त्रिपाठी का वचन याद करना अच्छा है.....

"सच्चा प्रेम वही है, जिसकी,
तृप्ति आत्मबलि पर हो निरभर।"

सब के मन में ऐसा प्रेम होता तो इस दूनिया में जीने से स्वर्गीय सुख पा जाता।..... "

किसी के आने की आवाज़ सुनकर मैं चारपाई पर उठ बैठा, इतने में तीन लडके मेरे कमरे में आये। वे वही तीन भाई थे जो एक या दो घण्टे पहले मेरे कमरे में आये थे। तब आठ बजनेवाला था। इतना सोच विचार करने को क्या था। कुछ भी नही लेकिन ऐसी चीज़े मन में आयी और अब भी इसका करण व्यक्त नहीं। इतना हीं मालूम होता है कि इस प्रकार कुछ समय बीत गया। यह तो एक या दो घंण्डे में, सिर्फ सोचने का विषय नहीं था। लेकिन ऐसा ही हुआ। खिडकी से देखा तो सब पहले के जैसे ही चलता था।.....बगीचे में मालीं एक गुलदस्त बना रहता था।.....इतने में हमारे लिए चाय तय्यार हो गयी थी। मैं चाय पीने बाहर गया। ये सब बातें—एक या दो घण्डे की बातें–बची–खुची यादगारों की तरह अब भी मेरे मन में फिरती हैं।